

युनिवर्सल लॉ

सभी पर समान रूप से लागू होने वाली ब्रह्माण्ड की संचालन व्यवस्था

संकलन : सी.ए. जयेश मोहनलाल शेट | www.jayeshsheth.com

- मैंने जो दिया था वही मुझे मिल रहा है। मैं जो दूसरों के लिये चाहूँगा वही मेरे साथ होगा।
- मैं आत्मा हूँ। यह शरीर मुझे मिला हुआ किरदार है। आम तौर पर मैंने जिस की कामना की थी, वही किरदार मिलता है।
- मेरे साथ जो भी घट रहा है वह मेरे भूतकाल का ही प्रतिबिम्ब है। वह मेरे भूतकाल के कर्मों का फल है। मैंने जो कार्य मन-वचन-काय से नहीं किया या नहीं करवाया वह मेरे साथ कभी भी घटने वाला नहीं है।
- इस से तय है कि मेरे साथ भूत, वर्तमान या भविष्य में कभी भी अन्याय न हुआ है न होगा। इस लिये मैं 'No Complaint Zone' 'शिकायत मुक्त भाव' में रह सकता हूँ। मेरे साथ जो भी होता है वह मेरे भूतकाल के कारण ही होता है। इस लिये 'मेरे साथ ही क्यों?' यह सवाल उपयुक्त नहीं है।
- मैं पुण्य करके और सप्त व्यसनों से (जुआ, शराब, मांस-भक्षण, वेश्या-गमन, चोरी, शिकार, परस्त्री-गमन या परपुरुष-गमन), तथा कन्द-मूल सेवन, रात्रि-भोजन और अभक्ष्य-भक्षण (अचार, मधु, अंजीर, मक्खन, इत्यादि से) मुक्त रह कर अपने लिये सौभाग्य निर्मित कर सकता हूँ।
- यह समीकरण याद रखना है — पाप = दुःख, पुण्य = सुख।
- मुझे दुःख से भी फ़ायदा उठाने का तरीका सीखना है।
- मैं यहाँ सिर्फ़ देने के लिये आया हूँ — वह भी बिना किसी शर्त या अपेक्षा के। इस तरह देकर मैं अपना पिछला कर्ज चुका रहा हूँ। या फिर नयी निधि जमा कर रहा हूँ। दोनों परिस्थितियों में फ़ायदा मेरा ही है।
- मुझे अपना फ़र्ज पूरे जोश से बग़ैर कोई अपेक्षा पूरा करना है। बाकी सभी ऐसा करें यह आग्रह भी नहीं रखना है। हम सभी को अपने परिवार, मित्र, सहयोगियों, समाज और राष्ट्र के प्रति अपना कर्तव्य पूरी निष्ठा से निभाना है।
- मुझे अपने साथ सख्त और दूसरों के साथ मृदु/दयालू रहना है।
- जो भी हो रहा है वह अच्छे के लिये ही हो रहा है। अगर मैं यह मान लूँ तो हमेशा सकारात्मक बना रहूँगा।
- लोगों के साथ चार प्रकार से पेश आना है :
 1. मैत्री — किसी से भी दुश्मनी नहीं होने के कारण अपनी प्रसन्नता बनी रहेगी। मित्रों का भला चाहने से अपना भला सुनिश्चित होता है।
 2. प्रमोद — दूसरे के गुण देखने से वे गुण मुझ में प्रकट होंगे।
 3. करुणा — पापी के प्रति करुणा रखने से अपनी प्रसन्नता बनी रहेगी।
 4. माध्यस्थ्य — कोई प्रतिक्रिया नहीं। जब मुझे कोई आहत करे तब मुझे शान्त रहना है। मन में Thank you! Welcome! धन्यवाद! स्वागतम्!' करना।

इस धन्यवाद स्वागतम् के भी तीन चरण हैं।

प्रथम चरण — अपनी भूतकाल की भूल के लिये माफ़ी माँगना। (Sorry! Sorry!).

द्वितीय चरण — दोबारा ऐसी भूल कभी नहीं करूँगा यह तय करना। (Never again).

तृतीय चरण — सामनेवाले को अपने को साफ़ करनेवाला और उपकारी मानकर मन में धन्यवाद देना। (Thank you!) इस से मुझे उस के प्रति गुस्सा, घृणा या तुच्छता के भाव नहीं आयेंगे। जिस से हम इस गुस्सा, घृणा या तुच्छता के विषैले चक्र से बच जायेंगे। यह तीनों चरण हमारी प्रसन्नता के लिये रक्षा कवच हैं। इस लिये यह सिद्धान्त स्वागत योग्य है। (Welcome!) इस तरह मैं अपने आप को नकारात्मक भावों से बचा कर सकारात्मक सोच रख सकता हूँ।

- अपनी सोच समझपूर्वक बदलनी चाहिये, न कि बलपूर्वक। इस से अपनी प्रसन्नता भंग नहीं होती। इसी लिये हमारा मार्ग 'सहज योग' का है, 'हठ योग' का नहीं।
- इस जीवन में मुझे अपने शरीर और मन का उपयोग कर संसार से मुक्ति हेतु सम्यग्दर्शन प्राप्त करना है।
- सत्य हमारे भीतर है। उसे कहीं बाहर ढूँढने की आवश्यकता नहीं है। हमें अपने आप को अन्दर से बदलने की आवश्यकता है।
- जिस ने सत्य प्राप्त किया है वही मार्ग बता सकता है। वैसे लोग यश, कीर्ति, धन, वैभव, सम्मान, इत्यादि के पीछे नहीं भागते।
- सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हेतु हमें सदैव सत्य स्वीकारने को तैयार (Ready to Accept) और अपने आप को बदलने को तैयार (Ready to Change) रहना चाहिये। सम्यग्दर्शन के लिये संसार की इच्छा, आकांक्षा, अपेक्षा छोड़ना नितान्त आवश्यक है; घर, परिवार, धन इत्यादि छोड़ने की आवश्यकता नहीं है। संसार की इच्छा, आकांक्षा, अपेक्षा छोड़ने के लिये हमें अपने आप को हर दो घण्टे में जाँचते रहना चाहिये और बारह भावना का चिन्तन कर के उसे मूल से निरस्त करना है।
- मुझे अपने आप को बदलना है (जो आसान है), औरों को बदलने का आग्रह नहीं रखना है (जो मुश्किल है और निराशा, शोक, संताप, कष्ट इत्यादि की जनक है); औरों को तो हम सिर्फ़ प्रेरणा दे सकते हैं।
- सभी संसारी जीवों के पास अनन्त काल तक रहने के दो ही स्थान हैं : १. मोक्ष (अनन्त सुख) और २. निगोद (अनन्त दुःख)। अगर मोक्ष नहीं मिला तो निगोद बिना किसी प्रयास के (by default) मिल जायेगा। इसलिये हमें मोक्ष के लिये ही सारे प्रयास करना है।
- अपनी औरों से तुलना न कर के अपने भूतकाल की तुलना अपने वर्तमान से करनी है और उसे बेहतर बनाना है। इस तरह हमें दैनिक प्रगति (Daily progress) करनी है।
- यह नियम दिन भर पालें और रात को सोने से पहले अपनी भूलों को जाँचना चाहिये।

विस्तृत समझ के लिये कृपया संकलनकार की किताब 'सुखी होने की चाबी' और 'सम्यग्दर्शन की विधि' पढ़ें।